ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 8, August 2022

मृत्युगंध : सुषमा मुनीन्द्र

श्वेता पाण्डेय and डॉ. अमित शुक्ला

शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश :

इस कहानी में एक पात्र है जिसका नाम निर्गुण साकल्ले है। निर्गुण साकल्ले की पत्नी का नाम बुलाकी है। निर्गुण साकल्ले पहली नियुक्ति पर आदिवासी क्षेत्र में आए हैं। इस आदिवासी क्षेत्र में एक–दूसरे के अगल–बगल दो बंगले बने हुए हैं। एक में निर्गुण साकल्ले अपनी पत्नी के साथ रहते हैं और दूसरे बंगले में मजिस्ट्रेट खान सपरिवार सहित रहते हैं। इस समय मजिस्ट्रेट खान अपने पिता के निधन पर परिवार सहित कामठी चले गए हैं। निर्गुण की पत्नी बुलाकी गर्भवती है तो वह मां के साथ चली गई है। कभी भी शुभ समाचार मिल सकता है। दोनों बंगलों के सामने बहुत बड़ा मैदान है। इसी मैदान पर एक–डेढ़ महीने से एक बंजारा परिवार तम्बू गाड़े पड़ा रहता है। जब बसंत पंचमी में इस मैदान पर मेला लगता है और जब कभी प्रदर्शनी लगती है तो खूब चहल–पहल रहती है। ये जो दोनों बंगले हैं बहुत ही पुराने और बड़े हैं। बंगले में ही कच्चे आंगन में एक बहुत बड़ा पीपल का पेड़ है। जिस पर बैजू कहता है कि इसमें प्रेत रहते हैं लेकिन अच्छे लोगों को नुकसान नहीं पहुंचाते। इस शोध पत्र में कहानी के परिप्रेक्ष्य में जानने का मुख्य प्रयास है।

मुख्य शब्द : साकल्ले, निर्गुण, पत्नी, बुलाकी, नियुक्ति, आदिवासी, क्षेत्र बारिश साहसी, निर्भीक आदि।

प्रस्तावना :

इस कहानी में एक पात्र है जिसका नाम निर्गुण साकल्ले है। निर्गुण साकल्ले की पत्नी का नाम बुलाकी है। निर्गुण साकल्ले पहली नियुक्ति पर आदिवासी क्षेत्र में आए हैं। इस आदिवासी क्षेत्र में एक–दूसरे के अगल–बगल दो बंगले बने हुए हैं। एक में निर्गुण साकल्ले अपनी पत्नी के साथ रहते हैं और दूसरे बंगले में मजिस्ट्रेट खान सपरिवार सहित रहते हैं। सुबह तो बहुत चटक धूप थी पर दोपहर तक कुछ काले बादल जाने कहां से आ गए। जैसे ही शाम हुई तो खूब सारे काले बादल पूरे आसमान में छा गए। एकदम तेज हवा चलने लगी और रात होते–होते खूब तेज बारिश होने लगी। छत्तीसगढ़ के इस तरफ क्षेत्र में धान अच्छा होता है क्योंकि यहां पर्याप्त मात्रा में बारिश हो जाती है। इस आंधी और पानी बरसने के कारण बिजली चली गई। निर्गुण साकल्ले वैसे तो अपने को बहुत ही साहसी, निर्भीक मानते हैं। खराब मौसम के कारण बैजू भी खाना बनाकर जल्दी चला गया। निर्गुण बिल्कुल अकेले पड़ गए थे। आज उनको अपनी पत्नी बुलाकी की बहुत याद आ रही थी अगर वह यहां होती तो दोनों मिलकर इस आंधी पानी का सामना कर लेते। पर क्या कर सकते हैं

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 8, August 2022

मां उसे अपने साथ ले गई है क्योंकि उसके प्रसव का समय निकट आ गया है। निर्गुण साकल्ले खिड़की के पास कुर्सी पर बैठ गए। चारों तरफ अंधेरा था। खुद को अकेला पाकर वह और डर जाते हैं। आज उनको एहसास हुआ कि उनका बंगला वाकई में बस्ती से दूर है। दूर–दूर तक कोई भी इंसान नहीं दिखता। सचमुच यह दुनिया मनुष्य से ही है। जो भी दुनिया की रौनक एव ंचमक है वह सब मनुष्य से ही है। इंसान के बिना इस संसार का कोई महतव नहीं है। इस अंधेरी रात में निर्गुण बंजारों के तम्बुओं का अनुमान लगाने लगे कि वे बेचारे कैसे होंगे। बहुत ही ध्यान से देखने पर उन्हें दो तम्बू दिखाई दिए। एक बड़ा तम्बू और दूसरा छोटा तम्बू। हवा इतनी तेज चल रही थी कि दोनों तम्बू हिल रहे थे। बड़े तम्बू में टेकराम उसकी पत्नी दो बेटियों, छोटा बेटा रहते हैं। छोटे तम्बू में टेकराम का बड़ा बेटा हेतराम, बहू सुभागी और आठ महीने का पोता रहता है। आज बड़ा तम्बू खाली है क्योंकि टेकराम परिवार सहित पास के दोहात में लगने वाली बाजार में सामान बेचने गया है। दो खच्चरों में वह सबको लाद लेता है। निर्गुण साकल्ले जब कार्यालय जा रहे थे तब बीच में टेकराम मिल गया था। निर्गुण से बैजू बताने लगा, ''साब, इन्हें ये जगह अच्छी लगने लगी है। जब भी आते हैं माह दो माह को ठहर जाते हैं। उधर दो तालाब है न, उससे इन्हें बहुत मदद मिलती है और ये मैदान तो है ही। इसे तो ये अपनी जागीर समझने लगे हैं।''

जब भी निर्गुण साकल्ले जीप में बैठकर कार्यालय जा रहे होते हैं तो बंजारा परिवार का कोई न कोई सदस्य मिल जाता है। कभी तो टेकराम अपने दोनों खच्चरों को पानी पिलाते हुए, कभी सिर पर रखे हुए मिट्टी का घड़ा लेकर सुभागी मिल जाती है। सुभागी का गाढ़ी छींट का धेरदार लहंगा (घाघरा) लहराता है। जब कभी सुभागी की नजर किसी से टकराती है तो वह लजा कर हल्का सा मुस्कुरा देती है। उसकी हंसी से जलता हुआ ड्राइवर कोदोराम बड़ी–बड़ी आंखें फैलाकर कहने लगता, ''बस ये लोग ऐसे ही मुस्कुरा कर अपना काम बनाते हैं। वो बूढ़ा टेकराम इसलिए आपको और जज साहब को जोहार करने पहुंच जाता है कि इन्हें कोई परेशान न करे। बहुत चालाक होते हैं साहब ये लोग। बच्चा चुराते हैं, घर से कपड़ा–बासन चुराते हैं, टोना–टोटका करते हैं। कभी करतब दिखायेंगे, कभी गण्डा ताबीज बेचेंगे कभी नामर्दी दूर करने की दवा तो कभी बांझपन की।''

''बेचारे इस तरह अपना पेट ही तो पालते हैं।'' कहते हुए निर्गुण साकल्ले एक बार पीछे मुड़कर सुभागी को देखते। इधर ड्राइवर अपनी बात आगे कहता, ''इधर देखिये साब तालाब में वो दूर देखिए दो कमल खिले हैं। लाल रंग के कहते हैं ये तालाब हर साल एक जान लेता है। इन कमलों का खिलाना बुरा माना जाता है। इस साल फिर किसी की यहां डूबने से जान जायेगी।''

लाल कमलों को देख कर लम्बी सांस छोड़ते हुए निर्गुण साकल्ले बोले, ''बहुत भोले हो तुम कोदोराम। ऐसा कुछ नहीं होता।'' फिर अचानक से बकरी के मिमियाने की आवाज आयी। जरूर यह बकरी टेकराम की होगी। इस संसार में चाहे जैसी परिस्थिति हो इंसान हर प्रकार से जी लेता है। बुलाकी को तो हौज भर में भी पानी कम लगता है और बेचारे इन लोगों को दो घड़े पानी में ही संतोष हो जाता है। हम जैसे लोगों को तो

इतने बड़े बंगले में भी सुविधाएं कम लगती है और ये बंजारे तम्बू में ही अपनी सुविधाएं बना लेते हैं। इंसान को जितना सुख–सुविधाएं मिलती हैं वह उतना ही उन सबका भोगी हो जाता है। निर्गुण साकल्ले इस आंधी–बारिश का अनुमान लगाने में लगे हैं कि न जाने कितने लोगों का घर का छप्पर उड़ा होगा, कितनी दीवारें ढही होंगी और पता नहीं कितने पशु–पक्षी यहां तक कि कितनों ने अपनी जान गंवाई होगी। निर्गुण जी को बकरी की आवाज बहुत पास सुनाई दी। अपने पास रखी टार्च को जला कर देखा तो बकरी मुख्य द्वार पर खड़ी थी। भगवान ने इन पशुओं को भी इतनी बुद्धि दी है कि वे अपनी जान बचा सके। फिर बिजली चमकी तो इतने में निर्गुण ने देखा कि छोटा तम्बू तो गिरा पड़ा है तो फिर सुभागी कहां होगी? हो सकता है बड़े तम्बू में चली गई हो। लेकिन बड़ा तम्बू भी किसी भी समय गिर सकता है। बारिश का पानी अंदर आ रहा था तो उन्होंने जल्दी से द्वार बंद कर दिया। वह फिर से कुर्सी में बैठ गए। बहुत रात हो गई पर उनको नींद नहीं आ रही। खूब बादल गरज रहे हैं, बिजली चमक रही है। न जाने सुभागी, उसका बच्चा और हेतराम का क्या हाल होगा। निर्गुण साकल्ले जब दोपहर को कार्यालय से वापस आ रहे थे तो सुभागी को अपने बाल सुखाते हुए देखा था उन्हें पता नहीं था कि सुभागी के इतने बड़े बाल होंगे। उनके मन में हर बार की तरह इस बार भी लगा कि सुभागी बहुत सुंदर है। हेतराम एकदम बेकार। पता नहीं भगवान ऐसी जोड़ी क्यों बना देता है। रविवार के दिन एक बार इन लोगों ने करतब दिखाया था। मजिस्ट्रेट खान का परिवार और निर्गुण पत्नी बुलाकी ने भी देखा था। तरह–तरह के करतब दिखाने लगे। निर्गुण साकल्ले **सोचने लगे कि ये लोग इतना जोखिम भरा करतब केवल मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि पेट के लिए कमाते हैं। भूख के लिए जान जोखिम में डालते हैं लेकिन बाद में इतना भी नहीं पाते कि अपनी जरूरतें पूरी कर सकें।** निर्गुण साकल्ले को सुभागी की आंखें सुंदर लगी। लोग करतब दिखा रहे थे और सुभागी बक्शीश के लिए हंस–हंस कर सबके पास जा रही थी। निर्गुण जी इतने प्रभावित हो गए थे कि सुभागी की झोली में इक्यावन रुपये डाल दिए। निर्गुण जी को लगा कि इन बंजारों को देखना दिनचर्या में शामिल हो गया है और जब ये लोग चले जाएंगे तो इतना बड़ा मैदान खाली हो जाएगा। इतनी देर तक कुर्सी में बैठने से निर्गुण जी का आलस आने लगा, पीठ में हल्का दर्द सा होने लगा। वह लेटने को जैसे ही उठे तभी किसी ने दरवाजे को खटखटाया। वे एकदम कुर्सी पर बैठ गए। वह सोचने लगे कि इतनी रात को कौन आया होगा। बकरी है या..... इतने में आवाज आयी, ''बाबू, दरवज्जा खोलो, बाबू.... मैं हूं सुभागी। दरवज्जा खोलो बाबू मेरा बच्चा पानी में मर जाएगा।'' सुभागी की आवाज सुनकर निर्गुण साकल्ले ने जल्दी से दरवाजा खोला। सुभागी अपने बच्चे को छाती से लगाकर अंदर घुस आई। सुभागी बिल्कुल सामने ही खड़ी थी। इतने नजदीक से सुभागी को उन्होंने कभी नहीं देखा था। निर्गुण ने टॉच की रोशनी सुभागी के चेहरे पर किया और बोले, ''क्या हुआ?'' टॉर्च की रोशनी से सुभागी की आंखें चकाचौंध सी हो गई और जो सिर में कपड़ा बांधे थी वह गीला हो गया था। उसने उस कपड़े को हटा दिया। निर्गुण जी सोचने लगे कि यह तो सच में बहुत सुंदर है।

''हेतराम कहां हैं?''

''सामान बेचने (जड़ी–बूटियां–औषधियां) गया तो अब तक पता नहीं। बच्चा को बुखार है। तम्बू गिर गया बाबू, अब हम कहां जाएं? निर्गुण ने बाहर की तरफ देखा। तम्बू पानी में गिरा पड़ा था। निर्गुण साकल्ले दुविधा में पड़ गए। वह सोचने लगे कि अब क्या करें? एक तो मौसम खराब, पूरी जगह अंधेरा और मैं अकेले। इस तरह मैं इसको घर में रखना क्या ठीक होगा? कहीं कुछ जादू–टोना न कर दे। किसी भी सामान की चोरी न कर ले। कहीं मेरे पर झूठा आरोप न लगा दे। अपना तो कहीं भी चले जाएंगे लेकिन मुझे तो यहीं रहना है। फिर सुभागी बोली, ''बाहर पड़े रहते हम, पर तुम्हारा पूरा ओसारा गीला है।''

शायद सुभागी निर्गुण जी की दुविधा को समझ गई। फिर जोर से बिजली कड़की। सुभागी ने बच्चे का जोर से छाती में छुपा लिया। मेरी सास कहती है ''बिजुरी चमके तो बच्चा को अकेले नहीं छोड़ना चाहिए।''

निर्गुण जी को फिल्मी दृश्य याद आने लगे कि किस तरह फिल्मों में पेड़ के नीचे खड़ी नायिका बिजली के कड़कते ही नायक के सीने से लग जाती है। यह सब तो फिल्मों में ही होता है। इसको तो अपने बच्चे की चिंता है। इसे किसी भी आदमी की जरूरत नहीं है। सुभागी बेचारी गीले कपड़ों में खड़े रहकर बच्चे को हिला–डुला रही है। निर्गुण जी सोचने लगे कि बेचारी परेशान है। अपने बच्चे को बचाने के लिए इतनी रात को यहां आ गई। मैं इतना डरपोंक, कायर नहीं हो सकता कि विपदा में पड़ी स्त्री को जगह न दूं। ''आओ, उस कमरे में रह जाओ।'' टॉर्च की रोशनी दिखा कर उसे कमरे तक पहुंचा दिया। बाहर की ठंग से कंपकंपाती सुभागी जल्दी से उस कमरे में जाकर एक कोने में बैठ गई फिर निर्गुण जी जल्दी से अपने कमरे में आ गए। उनका दिल जोरों से धड़क रहा था। खुद को संभालते हुए वह पलंग पर बैठ गए। निर्गुण साकल्ले लेट गए। बच्चे के रोने की आवाज आने लगी। एक बार सुभागी ने बुलाकी से बताया था कि मैं इतनी सुंदर हूं कि कई लड़के मुझसे शादी करना चाहते थे लेकिन मुझे हेतराम ही अच्छा लगता था। बुलाकी ने निर्गुण को सतर्क किया था कि इन लोगों से ज्यादा मेल जोल न रखना नहीं तो खतरे में पड़ सकते हैं। आज सही में वे खतरे में हैं। इस औरत की वजह से। लगातार बच्चा रो रहा है। कहीं उसको बुखार तो नहीं है। कपड़े भी गीले पहने हैं। सुभागी के तो कपड़े पूरे गीले होंगे, गीले कपड़ों में सोना नहीं हो पाता। निर्गुण उठा। कोई पुराना तौलिया लेकर कमरे तक चले गए।

''सुभागी।''

''हां, बाबू।''

''ले ये तौलिया पकड़ बच्चे को अच्छी तरह पोंछ दें।''

''बाबू कोई बोरा–फट्टा हो तो दो बिछा कर पड़ी रहूंगी।''

''ओह.... हां।''

सुभागी को बोरा देकर वे अपने कमरे में चले गए। पानी अभी भी बरस रहा है। बच्चे की आवाज अब सुनाई नहीं देती शायद सो गया होगा। सुभागी के कपड़े गीले हैं। लेकिन यहां उसके तरह का पहनावा कुर्ती,

घाघरा नहीं है। कुछ साड़ी है लेकिन वह साड़ी पहनना जानती ही नहीं होगी। हो गया बहुत ज्यादा उदारता भी नहीं दिखानी। फिर निर्गुण सोने की कोशिश करने लगा। अपने मन से सुभागी को हटाने लगे लेकिन मन भी बड़ा विचित्र है जो चीजें मना होगी वही करने का और मन करता है। बगीचों में लिखा होगा कि फूल तोड़ने का मन करता है। ऐसा ही हाल निर्गुण का है वह सुभागी के बारे में नहीं सोचना चाहते फिर भी उन्हें सुभागी की बातें याद आती हैं। जब से बुलाकी चली गई है तो दिनभर इन्हीं को देखने से टाइम पास होता है। सुभागी तरह–तरह के काम करती। कभी–कभी तो हेतराम सुभागी को पीट देता था। इतनी सुंदर औरत पर कोई कैसे हाथ उठा सकता है? सुभागी को ज्यादातर चूल्हे के पास ही देखा है। वह कुछ न कुछ बनाती रहती। जिस औरत के आने से उन्हें डर लग रहा था अब उसके रहने से उन्हें अच्छा लग रहा है। निर्गुण जी यह सोचकर खुश हो रहे थे कि इस बंगले के किसी एक कमरने में सुंदर सी औरत सो रही है। एक क्षण को तो उन्हें बादलों का गर्जना, बिजली कड़कना कुछ नहीं याद रहा। केवल बस सुभागी ही याद रही। अचानक से उन्हें लगने लगा कि पता नहीं कब से वह सुभागी को पाना चाहते हैं। आज वह समय आ गया कि उसे बिना पाए रह नहीं सकते। निर्गुण अपने अंदर हिम्मत जुटाने लगा। पहले उसे ये बारिश अच्छी नहीं लग रही थी लेकिन अब अच्छी लगने लगी क्योंकि इस बारिश की वजह से ही तो यह संयोग आया है। सौ–सौ रुपये देकर खुश कर देंगे। हो सका तो बच्चे को डॉक्टर को दिखा देंगे। पलंग से उठने लगे। पैर कांप रहे थे। इस तरह से करने पर उन्हें अपने ही घर में चोर सा लगने लगा और शर्म आने लगी। सोचने लगे कि उसने दरवजा बंद कर लिया होगा लेकिन दरवाजा खुला था। निर्गुण ने टॉर्च जलाकर देखना चाहा कि क्या कर रही है? इतने में सुभागी की आवाज सुनाई दी, ''क्या करू लाल? तेरी मां को न दूध मिलता है न अच्छा खाना। तेरा पेट कैसे भरें?''

अरे बच्चा अभी सोया नहीं है। मैं शायद अपने ही धुन में था कि बच्चे की आवाज नहीं सुनाई दी। उन्होंने सुभागी को आवाज लगानी चाही लेकिन गले ने साथ नहीं दिया। टॉर्च जलाकर देखा तो सुभागी पलथी मारे बोरे पर बैठी है। उसकी छाती खुली हुई थी। बच्चे को दूध पिला रही थी। टॉर्च की रोशनी से वह हकबका गई फिर वह दीवार की तरफ मुंह करके बैठ गई। निर्गुण ने जल्दी से टॉर्च बंद कर दी। वह एकदम समझ नहीं पाए कि क्या कहें और क्या बताएं कि मैं यहां क्यों आया?

बहुत देर से बच्चे का रोना सुन रहा हूं। बच्चा क्या बहुत परेशान कर रहा है सुभागी? उन्हें खुद नहीं पता चला कि यह सब कैसे बोलें।

''बच्चा भूखा है। मैं इसका पेट भर नहीं पाती। तुम सो जाओ बाबू, रात बहुत हो गई है। हमारी चिंता न करो। तुमने यहां रहने दिया मेहरबानी की। मेरा बच्चा तो आज मर ही जाता।''

''कोई परेशानी हो तो बताना।''

''अच्छा बाबू।''

निर्गुण साकल्ले अपने कमरे में लौट गए। उन्हें खुद पर आश्चर्य हो रहा था कि उन्होंने सुभागी के साथ कुछ नहीं किया। वे अपने समझ रहे थे कि मुझमें इतनी ताकत नहीं कि एक बच्चे को उसकी मां से अलग करूं। वह इस समय जिसको पाने की इच्छा रखते हैं वह एक मां भी है। इस समय सुभागी ममता से पूर्ण है। वे चाहकर भी सुभागी को छू नहीं पाएंगे। उनके हाथों में इतनी ताकत नहीं कि उसको अपनी ममता से दूर कर दें। वह सन्नाटे में बैठकर हांफने लगे। दीवार पर जो कैलेण्डर टंगा था वह तेज हवा के कारण फड़फड़ा रहा था। निर्गुण साकल्ले का पूरा विक्षोभ उस कैलेण्डर पर निकला। जैसे ही वह कैलेण्डर निकालने को हुए उनका ध्यान कैलेण्डर पर चित्र बना था उस पर गया। घायल हंस, देवदत्त और सिद्धार्थ। चित्र के पास लिखा था, ''मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।''

यह सब पढ़कर उनको एकदम होश सा आया। इंसान में भूख, निद्रा, डर और काम पशुओं की ही तरह होता है लेकिन भगवान में मनुष्य में क्षमा, विवेक, त्याग, करुणा, प्रेम जैसे विलक्षण भाव भी दिये हैं। ये सब क्या करने जा रहे थे? ये औरत बहुत ही विश्वास से जगह मांगने आई है। मैं उसके विश्वास को तोड़ नहीं सकता। अगर मैं ऐसा कुछ कर देता तो यह फिर किसी भी आदमी पर विश्वास नहीं कर पाती। वह अपना सिर पकड़ कर बैठ गए। एकदम उन्हें बुलाकी की याद आई। किसी भी दिन शुभ समाचार मिल सकता है। सुभागी दूध पीते बच्चे की मां है और बुलाकी मां बनने वाली है। बुलाकी स्वस्थ बच्चे को जन्म दे इसलिए बहुत ही उपाय किए गए। सीढ़ी न चढ़े, पौष्टिक वाला खाना खाए, खुश रहे, भगवान का ध्यान करे, ज्ञान देने वाली किताबें पढ़े ताकि बच्चे को अच्छी सीख मिले और स्वस्थ, बुद्धिमान बच्चे को जन्म दे। यहां के टोना–टोटका सुनकर ही तो मां ने बुलाकी को यहां नहीं रहने दिया और अपने साथ में ले गईं। आखिरकार सुभागी भी एक मां है। बेचारी के पास सुख–साधन नहीं है। वह अपने बच्चे को ममता, प्यार–दुलार के अलावा कुछ नहीं दे सकती। उनमें इतनी हिम्मत नहीं कि एक ममता से ओत–प्रोत स्त्री का चरित्र भंग करे। थोड़ी देर बाद साकल्ले रसोई में चले गए और भगोने से कटोरे में दूध निकाला उसमें शक्कर मिलाई, एक चम्मच लेकर सुभागी के पास गए।

''सुभागी, ले दूध लाया हूं। तेरा बच्चा भूखा है। उसे पिला दे बाकी बचे तो तू पी जाना। तू दूध पीते बच्चे की मां है, तुझे दूध की जरूरत है।''

टॉर्च की रोशनी में बड़ी–बड़ी आंखों में आंसू भरे कृतज्ञता से देख रही थी।

''ले पकड़।''

सुभागी ने कटोरा लेते हुए कहा, ''बाबू तुम देवता हो। यहां आने में बहुत डरी थी पर बच्चे के कारण आना पड़ा। तुम देवता हो बाबू।''

''जा बच्चे को देख। कोई देवता नहीं होता''

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 8, August 2022

सुबह होने तक पानी थम गया था। वह जाते हुए कहने लगी, ''बाबू, मैं रात में यहां थी किसी से न कहना, मेरे आदमी से भी नहीं। मैं जानती हूं तुम देवता हो पर ये दुनिया नहीं जानती। दुनिया का चलन ही कुछ ऐसा है।''

सुभागी बच्चे को छाती से चिपका कर घाघरा लहराती हुई चली जा रही थी। निर्गुण साकल्ले जो दूसरा बंगला था वहां चले गए क्योंकि अगर अर्दली सो करके जग गया हो तो तम्बू को गाड़ने में एवं उठाने में सुभागी की सहायता कर दे।

निष्कर्षतः इस कहानी से यह बात स्पष्ट होती है कि गरीबी, भूखे–प्यासे लोगों की मदद करने में भी कई सामाजिक अड़चने हैं फिर भी सुभागी के बच्चे के लिए निर्गुण साकल्ले ने सुभागी के बच्चे के प्रति जो धर्म निभाया यह अत्यन्त मार्मिक है और ऐसे व्यक्तियों की समाज में पूंछ परख निरंतर बनी रहती है और समाज के पिछड़े दलित लोगों के प्रति उदारता दिखानी ही चाहिए चारित्रिक दोषा से परे रहकर अन्यथा समाज के लोग ही अच्छे व्यक्ति को भी हेय दृष्टि से देखते हैं और उनका चारित्रिक पतन होता है।

संदर्भ स्रोत :–

(1) सुषमा मुनीन्द्र, कहानी मुत्युगंधा, पृष्ठ संख्या 15

(2) सुषमा मुनीन्द्र, मुत्युगंधा, पृष्ठ संख्या 20

(3) वही पृष्ठ संख्या 30

(4) वही पृष्ठ संख्या 32

(5) सुषमा मुनीन्द्र, विजय स्तम्भ, पृष्ठ संख्या 40

(6) सुषमा मुनीन्द्र, विजय स्तम्भ, पृष्ठ संख्या 58

(7) वही पृष्ठ संख्या 58